रासोसार ।

अर्थात्

पृथ्वीराजरासो का सारांश ।

आदि पर्व ।

[पहिला समय]

महाकवि चन्दबरदाई इस ग्रन्थ के आदि में सर्व-शक्तिमान् जगदीश्वर और अन्य देवताओं की वंदना करता है। वह कहता है कि आदिदेव को प्रणाम कर के मैं गुरू को नमस्कार करता हूं, सरस्वती के चरणों की वंदना करता हूं-आकाश, पाताल और मृत्युलोक की रचना करनेवाले, तथा लक्ष्मी जिनके चरण की सेवा करती हैं ऐसे विष्णु की वंदना करता हूं, सृष्टि की रक्षा करनेवाले सदाशिव की वंदना करता हूं। और चराचर के निर्माणकर्ता वरद स्वरूप ब्रह्मा की वंदना करता हूं।

पुनः वह कहता है कि श्रुति, वेद, जिसका मूल है, स्मृति और सत्यरूपी जल से जो सींचा गया है ऐसा धर्म्म-रूपी वृक्ष उत्पन्न हुआ जिसकी तीन शाखाएँ तीनों लोकों में व्याप्त हैं। वर्ण इस वृक्ष के पत्ते हैं, काव्य और उक्ति इसके सुंदर फल और फूल हैं। इस वृक्ष के ऊपर रस की अभिलाषा से कविलोग रमण करते हैं।

पुनः कवि कर्म की स्तुति करता है "कि प्रथम मंगल स्वरूप पूज्यपाद वेद जिसका मूल है; सत, रज तम तीनों गुण जिसकी शाखाएँ हैं; वर्ण और अक्षर जिसके पत्र हैं; धर्म्म जिसकी छाल है; और जिसका सत्तरूपी फूल चतुर्दिक फूल रहा है; (ऐसे वृक्ष में) कर्म का उदय रूपी मधुर फल लगता है। राजा की नीति से रक्षा किया हुआ वह वृक्ष नहीं हिलता ऐसा इस जीवन में अमृत समान स्वाद मिलता है-अर्थात् उक्त रीति से जीवन व्यतीत करनेवाले पुरुष को किसी भी कलङ्क का भय नहीं, यह निश्चय है।

पुनः कवि मुक्ति के विषय में कहता है कि भोग रूपी भूमि की क्यारी, वेदरूपी जल से सींची गई, जिसमें आयुरूपी बीज बोया गया, और ज्ञानरूपी अंकुर उत्पन्न हुआ, तीनों गुण जिसकी शाखा हैं, अनेक भिन्न भिन्न नाम जिसके पत्र हैं, जिसमें सुकर्मरूपी फूल लगता है, जिसमें मुक्तिरूपी सुन्दर फल लगता है-यह मुक्तिरूपी वृक्ष एक ही है किन्तु इसकी शाखाओं का प्रस्तार तीनों लोक में है।

तदनन्तर कवि चन्द अपने से पूर्व प्रसिद्ध कवियों की स्तुति करता हुआ कहता है कि प्रथम अर्थात् आदि कवि जगदीश्वर को मेरा नमस्कार है जो इस संसार में एक हो कर भी अनेक रूप से व्याप्त है-दूसरे कवि ब्रह्मा हैं जिन्होंने वेद का कथन किया, तीसरे कवि वेदव्यास जिन्होंने भारत बनाया-चौथे श्रीशुक-देव जी जिन्होंने परीक्षित को भागवत् श्रवण कराया, पांचवें मनुष्य तनधारी श्रीहर्ष जी, छठें श्रीकवि कालि-दास जी जिनको सरस्वती जी साक्षात् सिद्ध थीं, सातवें कवि दण्डमाली जी, आठवें जयदेव जी जिन्होंने केवल गोविन्द गुण का ही गान किया। उक्त कवियों की